सुनो भाई साधों

[सामाजिक जागरण हेतु बाल एवं प्रौढ़ोपयोगी]

शिवराज छंगाणी

प्रकाशक

गाडोदिया पुस्तक भण्डार

फड़ बाजार, बीकानेर

अपनी ओर से

देश की स्वाधीनता को कायम रखना सजग नागरिकों पर निर्भर करता है। समाज में व्याप्त अंधविश्वास, कुरीतियां, अशिक्षा एवं दहेज-प्रथा को समूल उखाड़ फेंकने हेतु सामाजिक जागरण की आवश्यकता होती है। पुस्तक-लेखन का उद्देश्य तभी सिद्ध हो सकता है जबकि राष्ट्र के बालक एवं प्रौढ़ इसे पढ़कर सामाजिक सद्भाव एवं नैतिक आचरण उत्पन्न कर सकें तथा समाज का मार्ग-दर्शन करने में भी सक्षम हों। आशा है पुस्तक उपादेय होगी।

पुस्तक-प्रकाशक श्री किशन लाल गाडोदिया का सहयोग स्तुत्य है।

अनुक्रमणिका

नशा बुरा है !

रामली दिन भर मेहनत करती । सवेरे-सवेरे सारे कच्चे घर की-सफाई तथा नों आदि को साफ करना उसके नियमित कार्यों में शामिल है । स्नानादि से निवृत कर पड़ोसी से चाय के लिए दूध लाती, कभी-२ दूध नहीं मिलता तो बहुत दूर डेयरी पर दूध खरीद कर लाती, तब तक बर्तन में पानी उबलता रहता । उबलते नी में चाय पत्ती और चीनी डालती और जब चाय बन कर तैयार हो जाती तो पने पति देवला को आवाज देती है ।

देवला उस समय तक गहरी नींद में सोया रहता । एक आवाज लगाने पर ह कभी नहीं उठता । देवला भी मेहनती है, पक्का मजदूर है । मजदूरी हमेशा करने ाता है । संध्या समय काफी थक जाता है । थकान मिटाने के लिए वह शराब के के से आधी बोतल शराब लाता । शराब पीकर गहरी नींद में सो जाता ।

रामली ने फिर से देवला को पुकारा । वह बोली– उठो, चाय तैयार है । ाप दातुन कर लें तथा चाय पी लें ।

देवला अंगड़ाई लेता है । बिस्तर से फिर अलग हटकर पानी से मुंह साफ करता है । इतने में रामली चाय का प्याला ले आती है । देवला चाय की चुस्की लेता है और रामली की ओर देखता है । रामली और देवला की नजरें मिल जाती हैं, परन्तु एक दूसरे को कुछ भी नहीं कह पाते ।

देवला जाति से ओड है । ओडों की बस्ती में रहता है । घर पर पच्चीस गधे खरीदे हुए हैं । वह रोजाना खाना खाकर शहर में मजदूरी के लिए निकल पड़ता है । हमेशा सौ या डेढ़ सौ के बीच कमाई करता है । जमीन खोदना, कूड़ा-करकट इकट्ठा करके गधों पर लादना और बाहर फेंकवा देना ही उसका नित्य प्रति का काम है ।

देवला के दो लड़के हैं तथा एक लड़की । पास में ही एक पाठशाला है, जिसमें

वालकों को पढ़ने के लिए भेजा जाता हैं । कपड़े मैले कुचेले तथा फटे-पुराने हैं। साफ सफाई कुछ भी नहीं है । पाठशाला के अध्यापक उन वालकों को रोजाना साफ-सुथरे आने के लिए कहते है । कई वार उन वालकों को कक्षा से वाहर निकाल दिया जाता है ।

वालक रोते-विलखते रामली के पास आते हैं। वे उनसे अच्छे कपड़े बनवाने और साफ-सफाई से रहने की अध्यापकजी की वात सुनाते हैं । पढ़ने के लिए पुस्तकों की जरूरत भी होती है रामली वालकों को धीरज वंधाती । है वह कहती है कि आज रात को तुम्हारे पापा को कहकर सभी चीजें मगवा दूंगी ।

परन्तु जब भी रात होती, देवला रात के राजा वने हुए आते । वस कमाना और शराव पीनी ही उसका एक मात्र काम रह गया हैं, वाकी कोई जिम्मेवारी दिखती भी नहीं ।

रामली ने रात को मौका पाकर देवला को वालकों की पढ़ाई व उनकी जरूरतों की वात वतलायी ।

नशे में धुत् देवला ने बहकना शुरू कर दिया । वह जोर-जोर से रामली को गालियां देने लगा । यहां तक स्थिति पहुंच गयी कि उसने घर के वर्तन आदि फेंकने शुरू कर दिये ।

ओडों की वस्ती में रात को कुहराम मच गया । शोर गुल सुनकर पड़ौसी भाग कर आते हैं । वे देखते हैं कि देवला ने घर को सिर पर चढ़ा लिया है ।

जानते हैं कि देवला नशे में कितना नुक्सान कर सकता है । पसीने की
राब की लत्त में समाप्त हो जाती है । बस्ती के लोग जो वहां
ह से भी शराब की बदबू आती है,
उनके साथियों में से दो घर में घुसते हैं तथा देवला को अपने
और आराम करने की सलाह देते हैं ।

देवला मन ही मन बड़-बड़ाता हुआ थोड़ी देर में ही नींद में सो जाता है।
सवेरे देर से उठता है। इधर उधर नजर डालता है। न तो रामली दिखाई है तया न बालकों की चहल पहल।
कमरे के सारे सामान बिखरे पड़े है। मिट्टी के बर्तन टूट चुके हैं। चाय याले भी टूकड़े टूकड़े हो चुके हैं। चाय बनाने का बर्तन उल्टा पड़ा है। देवला ता है कि यह सब कैसे हो गया? सारा घर उसके लिए पहेली बन चुका है।
ले की लड़की मल्लिका अपने पिता के चेहरे की ओर देखती है। वह जानती है कि ी उसके पापा प्रसन्न हैं।
वह कहती है- "पापा! पाठशाला के लिए पोशाक बनवा दें- ऐसा मास्टरजी हते हैं।" पुस्तकें भी दिलावें ताकि पढ़ाई अच्छी तरह हो सकें।
"क्यों नहीं मल्लिका, आज शाम को मैं तुम्हारे व मल्लू-लल्लू के लिए ड़े खरीद लाता हूं फिर दर्जी से सिलाई करवा देंगे।" देवला बोला!
"और पापा पुस्तकें भी लाकर दें।"
"जरूर लावूंगा! आज ही ला दूंगा।" देवला मल्लिका के सिर पर हाथ र कर विश्वास दिलाता है।
थोड़ी ही देर बाद पड़ौसी रूपा काका आ जाते हैं वे मजदूरी पर चलने के लए देवला को पुकारते हैं।
देवला ने आज मजदूरी में १५०रू. कमाये। उसने वापिस गधों को किसी के ाथ घर भेज दिया और खुद बाजार चल देता है।
रूपा काका कहता है- देवला! चलें, थोड़ा नशा तो कर लें।
देवला- नहीं काका, मैंने आज से शराब पीना छोड़ दिया है यह एक दुर्व्यसन है। इस से घर बर्बाद हो जाते हैं। मैंने आज से अब फिजूल खर्ची भी छोड़ दी है।

रूपा भी आज शरा के ठेके पर नहीं जाते हैं। वे घर की ओर चल देते हैं। देवला बाजार से बालकों के लिए पोशाक के कपड़े खरीदता है तथा नई पुस्तकें भी।

घर लौटते समय वह आटा-दाल के साथ केले और दो-तीन सेव भी जाता है।

बालक दूर से देवला को देखते हैं तो वे दौड़कर उनके पास जाते हैं। अपने कपड़ों और पुस्तकों को देखकर बड़े प्रसन्न होते हैं। रामली भी आ खुश नजर आती है। वह सामान का थैला देखती है तो उनमें केले और से भी बालकों के लिए हैं।

आज पहली बार देवला होश में हैं। वह अपने बच्चों के लिए फल भ लाया है। वस्त्र और पुस्तकें भी।

वह घर के दूसरे कमरे की ओर जाता है। दरवाजा खटखटाता है।

"मल्लू ! अरे ओ लल्लू! अब तो नींद से उठो"- देवला ने ऐसा कह कर फिर से दरवाजा खट-खटाया।

भीतर से आवाज आई- "पापा ! अभी आते हैं। यह मल्लिका तो अभी भी सो रही है।

देवला बोलता है-"फाटक खोलो ! रामली को उठाओ। आज तेरी माँ देरी से नींद से उठ रही है। क्या तुम्हें पाठशाला नहीं जाना ?

कमरे का फाटक खुलता है। बच्चे बाहर आंगन में आ जाते हैं परन्तु ... अभी सोयी पड़ी है। रात को देवला ने [illegible] फंके थे-सो उसके पर लग गयी है। मुंह पर सोजन आ [illegible] [illegible] र्द है

देवला धीरे से रामली के पास जाता है । वह कहता है-"रामली! सवेरा हो गया है । बच्चों के लिए चाय तैयार करो । मुझे भी पिलाओ ।"

रामली बिस्तर से उठती है । चेहरे पर उदासी है । बदन टूट सा रहा है । आंखें रोने से लाल हो चुकी है ।

देवला उसी क्षण पूछ बैठता है-"क्या बात है रामली, तुम्हारी यह दशा कैसे हो रही है ? घर के सामान बिखरे पड़े है । बर्तन टूट चुके हैं-ऐसा क्यों ?

रामली अपनी नजर देवला की ओर फेरती है । देवला उसके चेहरे को देखकर आश्चर्य चकित हो जाता है । वह सोचता है - "यह सब कैसे हुआ ? फिर रामली से पूछ बैठता है" ।

रामली ने जवाब दिया कि यह सब आपके शराब के नशे में ही हुआ है । रात को नशे में धुत् आपने सारे घर को उजाड़ दिया । बस्ती के लोग इकट्ठे हो गये थे । मैंने तो आपको सिर्फ बच्चों के लिए पोशाक और पुस्तकों के लिए कहा था, लेकिन आपने तो घर में लंका कांड मचा दिया ।

देवला होश में है । वह आज से शराब पीने की सौगंध लेता है । शराब ने गरीब लोगों के घर बर्बाद कर दिये हैं । उनकी जमीन जायदादें बिकवा दी है- ऐसा पछतावा करते हुए देवला रामली के सामने शराब न पीने की प्रतीज्ञा धारण करता है । रामली के चेहरे पर मुस्कराहट की रेखा दौड़ जाती है ।

वह उठकर चाय तैयार करती है तथा अपने बच्चों को पिलाती है । देवला को भी एक प्याला देती है ।

❀

राजू काका की बात-चीत से रेमा बहुत प्रसन्न होता है तथा सफाई की गति तेज कर देता है ।

आज मोहल्ले में पानी का छिड़काव हो रहा है। रात के आठ बजे दुकानदार से राजू काका का भतीजा माईक ले आता है । रेडियो उचित स्थ पर रख दिया जाता है ।

मंच के पास राजू काका घूम रहे हैं । भजन-मंडलियां आनी प्रारंभ हो ग है । मोहल्ले के प्रमुख कार्यकर्ता उनको बिठाने की व्यवस्था कर रहे हैं ।

पहली भजन-मंडली के मुखिया नारायण महाराज हैं । वे अपने इकत पर गाना प्रारंभ करते हैं-

जाका गुरू भी अंधला, चेला खरा निरंध ।
अंधे - अंधा ठेलिया, दोन्यूं कूप परन्त ।।
चलती चक्की देखकर, दिया कबीरा रोय ।
दोय पाटन के बीच में, साबत बचा न कोय ।।

बहुत ही मीठी वाणी में भजन गाया जा रहा है राजू काका के पा बैठा मोहन पूछ बैठता - काका ! यह "कबीर" शब्द क्या है ?

राजू काका- मोहन ! यह कबीर दास जी का नाम है

मोहन पूछता है - राजू काका ! कबीर दास जी का जन्म कब हुआ क्या ये दोहे-भजन उनके द्वारा बनाये गये हैं ?

राजू काका कहता है- मोहन ! कबीर दास आज से सैंकड़ों वर्ष पह । उनका जन्म सन् १३६६ के लगभग हुआ है ।

मोहन बोला- राजू काका ! कबीर के भजनों में बहुत अच्छी बातें बता है । सुनने में बड़ा आनंद आता है ।

कहत कबीर सुनो भई साधो !

शहर में प्रायः चहल पहल रहती है अच्छे २ उत्सव-पर्व पर भजन-कीर्तन लोग करते रहते हैं। आज एकादशी है। मोहल्ले में राजू काका खड़े हैं हरिजन को आदेश दे रहे हैं। अरे खेमा ! आज इस मैदान की सफाई अच्छी तरह कर दे। देख, यह गन्दगी अभी तक बिखरी हुई है। जल्दी-जल्दी साफ कर दे।

खेमा हरीजन बोला-राजू काका ! आज क्या बात है, कोई मेहमान आने वाला है?

राजू काका- नहीं बेटा ! आज एकादशी है। रात को यहां भजन-संगीत होगा। मोहल्ले के लोग इकट्ठे होंगे।

खेमा बोला- राजू काका ! भजन-संगीत को तो सुनने का मुझे भी प्रेम है। मेरी गुवाड़ (वस्ती) के लोग भी अच्छे भजन गाते हैं। क्या हम भी यहां सुनाने आ सकते है ?

राजू काका- क्यों नहीं खेमा, जरूर आवो। ऐसे मौके पर तो आना चाहिये। यह कार्यक्रम तो सभी लोगों का है। सबको इसमें आनन्द लेना चाहिये।

खेमा बोला- राजू काका ! हम लोगों के आने से मोहल्ले के लोग नाराज तो नहीं हो जावेंगे। हम हरिजनों में भी अच्छे संगीत कार हैं। गायक हैं।
' -ढोलक वादक भी हैं। हारमोनियम पर भी गा सकते हैं। आपके
-भाव तो नहीं है। ऐसा न हो कि हमारे कारण आपका कार्यक्रम
हो जाय।

राजू काका- खेमा ! तू समझदार है फिर भी ऐसी बात क्यों करता है। किसी कवि ने लिखा है- जात-पांत पूछे नहीं कोई, हरि को भजे सो हरि को होई-यानि परमात्मा के दरबार में जाति-भेद नहीं है। उनको याद करने वाले उन्हीं के है। परमेश्वर की नजर में सब बराबर हैं। इसलिए जरूर आवो। अपने भजन-गीत आदि सुनाओ।

राजू काका की बात-चीत से खेमा बहुत प्रसन्न होता है तथा सफाई की गति तेज कर देता है।

आज मोहल्ले में पानी का छिड़काव हो रहा है। रात के आठ बजे हैं दुकानदार से राजू काका का भतीजा माईक ले आता है। रेडियो उचित स्था पर रख दिया जाता है।

मंच के पास राजू काका घूम रहे हैं। भजन-मंडलियां आनी प्रारंभ हो गई है। मोहल्ले के प्रमुख कार्यकर्ता उनको बिठाने को व्यवस्था कर रहे हैं।

पहली भजन-मंडली के मुखिया नारायण महाराज हैं। वे अपने इकतारे पर गाना प्रारंभ करते हैं-

जाका गुरू भी अंधला, चेला खरा निरंध।
अंधे - अंधा ठेलिया, दोन्यूं कूप परन्त ॥
चलती चक्की देखकर, दिया कबीरा रोय।
दोय पाटन के बीच में, साबत बचा न कोय ॥

बहुत ही मीठी वाणी में भजन गाया जा रहा है राजू काका के पास बैठा मोहन पूछ बैठता - काका ! यह "कबीर" शब्द क्या है ?

राजू काका- मोहन ! यह कबीर दास जी का नाम है

मोहन पूछता है - राजू काका ! कबीर दास जी का जन्म कब हुआ ? क्या ये दोहे-भजन उनके द्वारा बनाये गये हैं ?

राजू काका कहता है- मोहन ! कबीर दास आज से सैकड़ों वर्ष पहले हुए हैं। उनका जन्म सन् १३६६ के लगभग हुआ है।

मोहन बोला- राजू काका ! कबीर के भजनों में बहुत अच्छी बातें बताई हैं। सुनने में बड़ा आनंद आता है।

राजू काका-हाँ बेटा ! कबीरदास ने बहुत ज्ञान की बातें लिखी हैं। वे पैदा नहीं होते तो हिन्दू और मुसलमान आपस में सिर टकरा कर लड़ते-मरते। उन्होंने समाज में होने वाली बुराइयों को मिटाने की बात कही है। वे जांति-पांति भेद, छुआ-छूत, और दिखावे को कभी पसंद नहीं करते। उन्होंने हिन्दुओं मुसलमानों को बुराइयों पर खूब डांट-फटकार लगायी है।

बात-चीत हो रही है। इतने में मोहन की नजर सामने से आने वाले लोगों की ओर जाती है। मोहन देखता है कि खेमा हरिजन अपनी भजन-मंडली के साथ आया है। उसने राजू काका को खेमा हरिजन के आने की सूचना दी।

राजू काका शीघ्र खेमा हरिजन की ओर दौड़ते हैं तथा उनकी मंडली का स्वागत करते हैं। खेमा मंडली का गायक है। यह दोहे सुनाता है-

कांकड़ पत्थर जोरि के मसजिद लई चुनाय,
ता चढ़ि मुल्ला बांग दे क्या बहिरा हुआ खुदाय।

पाहन पूजे हरि मिलै तो मैं पूजूं पहाड़,
ताते या चाकी भली, पीस खाय संसार।

मूंड मुडाये हरि मिलै सब कोइ लेय मूडाय,
बार बार के मूड़ते भेड़ न वैकुंठ जाय।

दिन में रोजा रखत है, रात हनत है गाय,
यह खून वह बंदगी, कैसे खुशी खुदाय।

सुनने वालों का ध्यान कबीर के दोहों पर जाता है। अनुभव की गहराई लिये हुए ये दोहे बहुत अच्छी बातें बताते हैं।

राजू काका ने मोहन से कहा- देख बेटा! खेमा-मंडली कितने अच्छे भजन है। कबीर दास के दोहों में दिखावा करने वालों को फटकार दी गयी है

अंध विश्वास को बुरा मानते हैं तथा आदमी का आदमी के प्रति भेद-भाव बिल्कुल पसन्द नहीं करते ।

भेद-भाव की दीवार तो स्वार्थी लोगों ने बनवायी है । परमात्मा की नजर में सब लोग समान हैं । वे अच्छाइयों को चाहते हैं । बुराइयों को नहीं ।

मोहन बोला-वाह राजू काका ! आज तो आपने हमारी आँखें खोल दी। हमारे भीतर से भेद-भाव हट गया है । हमारे मोहल्ले की सफाई करने वाला खेमा हरिजन भी एक इन्सान है । उसके दिल में भी प्रेम है । वास्तव में भेद-भाव, जात-पांत के बंधन स्वार्थी लोगों की देन है। देर रात तक जागरण चलता रहता है । राजू काका और मोहन खूब भजन-गायन सुनते रहते हैं। मोहन को भी संत कबीर की रचनाओं से प्रेम हो गया है । कबीर दास जी के द्वारा लिखी हुई साखियां, दोहे, रमैनियां एवं उल्ट-बासियों को मोहन पढ़ता है और याद करता है ।

मोहन राजूकाका से कहता है- काका ! भेद-भाव को दूर हटाने, जात-पांत की खाई को मिटाने तथा आदमी का आदमी से प्रेम बढ़ाने वाले ऐसे भजन, संगीत के कार्यक्रम, नगर के प्रत्येक मोहल्ले में आयोजित किये जाने चाहिये ।

खेमा मंडली की "कहत कबीर सुनो भाई साधों" वाली पंक्ति सुनते ही समाज सुधार की बात मोहन के दिमाग में आ जाती है ।

वह उसी दिन से संकल्प लेता है कि मैं जात-पांत के भेद-भाव को दूर करके ही दम लूंगा । ऊंच-नीच, छुआ-छूत एवं भेद-भाव सब स्वार्थी लोगों के द्वारा बनाये गये हैं । इसे दूर करना ही मानव जाति का कल्याण है ।

दहेज : समाज का कलंक !

सरला एक खूबसूरत लड़की है। उसके पिता किसी सरकारी विभाग में बाबू (क्लर्क) हैं। सरला की माता ज्यादा पढ़ी-लिखी नहीं है। वह घर पर ही रामचरित मानस, गीता तथा अन्य ज्ञान की कहानियां पढ़ती रहती है। सरला के दो भाई है एक धीरज और दूसरा नीलकंठ। वे दोनों भाई पिता की तरह सांवले रंग के है। सरला अपनी माता के चेहरे पर है। उसके आंख, नाक तथा चेहरे की बनावट बड़ी सुन्दर लगती है। यदि सरला दो मिनट हिले-डुले नहीं तो वह दूर से कोई संगमरमर की मूर्ति की तरह दिखाई पड़ती है।

सरला के पिता का नाम रामशरण है। सरकारी विभाग में बाबू होने के कारण प्रतिदिन अपने कार्य में व्यस्त रहते हैं। रविवार की एक छुट्टी उनके लिए आरामदायी होती है, परन्तु उस दिन घरेलू काम काज, जो कि सप्ताह भर के होते हैं उन्हें निपटाने पड़ते हैं।

बाबू रामशरण की आय सीमित है। बालक-बालिका की शिक्षा का प्रबंध करना, उनकी फीसों का एवं पुस्तकों का इन्तजाम भी वे इस आमदनी में से ही करते हैं।

बालकों में सरला सबसे बड़ी है। पढ़ने में होशियार है। हर वर्ष अपनी कक्षा में अच्छे अंकों से पास होती है। वह बी. ए. पास कर लेती है।

सरला के पिता की इच्छा है कि वह बी. एड. की डिग्री भी ले पास हो के कॉलेज में उसे प्रवेश दिला देते है।

सरला एक वर्ष में प्रशिक्षित हो जाती है । घर में अधिक काम काज होने से सरला का मन नहीं लगता है । वह अपनी माता से नौकरी के लि कहती है परन्तु उसकी माता उसे कोई जवाब नहीं देती ।

सरला की माता को चिन्ता बढ़ती ही जाती है। बाबू रामशरण भी इसी चिन्ता में दुबले हो रहे हैं।

एक दिन बाबू रामशरण के मित्र उनके घर पर आते हैं। उनके एक लड़का है। वह पढ़ा-लिखा है। समीप के कारखाने में वह लड़का मैनेजर है। वेतन भी अच्छा मिलता है।

बाबू रामशरण की पत्नी चाय बनाकर उनके लिए लाती है। वह सरला के बारे में उनसे बातचीत करती है। सरला विवाह योग्य हो गयी है। बड़ी समझदार एवं चतुर लड़की है। पास ही के विद्यालय में पढ़ाती है।

सरला की माता ने ज्योंही बात समाप्त की थी कि उसी क्षण सरला घर पर आ जाती है। वह बाबू रामशरण के मित्र को नमस्कार करती है। और घर के काम-काज में जुट जाती है।

सरला को देखते ही बाबू रामशरण के मित्र बड़े प्रसन्न होते हैं। सरला की सुन्दरता एवं विनम्रता उनके दिल में घर कर जाती है। बात ही बात में वे बाबू रामशरण से अपने लड़के के लिए सरला को मांग लेते हैं।

बाबू जी की सहमति से पहले ही वे सरला की माता से कहते हैं -"आप सरला को मेरे लड़के के लिए मुझे देने का वचन दें-अन्यथा मैं चाय नहीं लूंगा।

"लड़की आप की ही है-इसमें कौन इन्कार कर सकता है" - सरला की माता ने उत्तर दिया।

"अच्छा अब मैं चाय पी सकता हूं"।

बाबू रामशरण सकुचाते हुए कहते हैं -विवाह में कोई लेन-देन की बात-भई आज का जमाना है।

"लेन-देन कुछ भी नहीं।" मित्र ने जवाब दिया।

"हां बेटी ! आज के जमाने में किसी को बेकार नहीं बैठना चाहिए। फिर तुम तो पढ़ी लिखी हो।"

"तो बाबूजी, आप माताजी से भी आज्ञा दिलावें। मैं नौकरी करना पसंद करती हूं - वह एक अच्छा कार्य है।

बाबू रामशरण अपनी पत्नी को सरला की बात समझाते हैं। सरला की माता बाबू रामशरण के कहने को कभी मना नहीं करती। थोड़ी सी बहस के बाद वह सहमत हो जाती है।

अब सरला को पास के विद्यालय में नौकरी करने की आज्ञा मिल जाती है। सरला भी प्रसन्नता पूर्वक अपने पढ़ाने के कार्य में लग जाती है।

सरला अपने प्रत्येक माह के वेतन को माताजी के हाथों सौंप देती है। माताजी उसकी कमाई का एक पैसा भी घर खर्च में नहीं लगाती। वह सीधे रामशरण की तिजोरी में रखवा देती है।

बाबू रामशरण के दोनों बालक अभी पढ़ रहे हैं। उनकी शिक्षा पूर्ण होने में समय लगेगा। सरला अब सयानी हो चुकी है। उसकी शादी के लिए योग्य वर खोजना आवश्यक है - ये ही विचार बाबू रामशरण को चिन्ता ग्रस्त रखते हैं।

बाबू रामशरण का समाज बड़ा विचित्र है। लड़की की शादी में हजारों रूपयों का दहेज देना पड़ता है। बिना दहेज के लड़कियां बिना शादी-शुदा रहती हैं। ये माता-पिता के लिए चिन्ता का विषय बन जाती हैं।

सरला की माता अपने संबंधियों में अच्छे लड़के की खोज में लग जाती
। अच्छे घराने के लोग अपने लड़कों की कीमत ऊंची लेना चाहते हैं।
वालों का नाक ऊपर चढ़ता जाता है।

सरला की माता की चिन्ता बढ़ती ही जाती है। बाबू रामशरण भी इसी चिन्ता में दुबले हो रहे हैं।

एक दिन बाबू रामशरण के मित्र उनके घर पर आते हैं। उनके एक लड़का है। वह पढ़ा-लिखा है। समीप के कारखाने में वह लड़का मैनेजर है। वेतन भी अच्छा मिलता है।

बाबू रामशरण की पत्नी चाय बनाकर उनके लिए लाती है। वह सरला के बारे में उनसे बातचीत करती है। सरला विवाह योग्य हो गयी है। बड़ी समझदार एवं चतुर लड़की है। पास ही के विद्यालय में पढ़ाती है।

सरला की माता ने ज्योंही बात समाप्त की थी कि उसी क्षण सरला घर परआ जाती है। वह बाबू रामशरण के मित्र को नमस्कार करती है। और घर के काम-काज में जुट जाती है।

सरला को देखते ही बाबू रामशरण के मित्र बड़े प्रसन्न होते हैं। सरला की सुन्दरता एवं विनम्रता उनके दिल में घर कर जाती है। बात ही बात में वे बाबू रामशरण से अपने लड़के के लिए सरला को मांग लेते हैं।

बाबू जी की सहमति से पहले ही वे सरला की माता से कहते हैं-"आप सरला को मेरे लड़के के लिए मुझे देने का वचन दें-अन्यथा मैं चाय नहीं लूंगा।

"लड़की आप की ही है-इसमें कौन इन्कार कर सकता है" - सरला की माता ने उत्तर दिया।

"अच्छा अब मैं चाय पी सकता हूं"।

बाबू रामशरण सकुचाते हुए कहते है -विवाह में कोई लेन-देन की बात-भई आज का जमाना है।

"लेन-देन कुछ भी नहीं।" मित्र ने जवाब दिया।

फिर भी कुछ तो कहें बाबू रामशरण बोले

"केवल मात्र लेना कन्या दान है, और अब आपको देना यही है" रामशरण के मित्र बोले।

विवाह का मसला तय हो गया। बाबू रामशरण और उनके मित्र दोनों ही प्रसन्न मुख चाय पीकर घर से निकलते हैं।

बाबू रामशरण के मित्र अपने घर जाकर अपनी पत्नी से बातचीत करते हैं। वे अपने लड़के को भी बुलाते हैं तथा उसका सम्बंध बाबू रामशरण की होनहार सुशिक्षित एवं विनम्र बालिका सरला के साथ तय करने की सूचना देते हैं।

सरला को वह लड़का पहले से जानता है। फिर अपने पिताजी के पुराने मित्र बाबू रामशरण की प्रगाढ़ मित्रता से भी वह परिचित है। लड़का होनहार है। मैनेजर है। अतः दहेज पसंद नहीं करता। इसीलिए उसने अपने पिताजी से कहा- बाबूजी! मैं आपसे सहमत हूं। बस! मुझे घृणा है तो दहेज लेने से। दहेज समाज का कलंक है।

मैनेजर के पिता बोले-बेटा! मैं तुम्हारी भावना को जानता हूं। मैंने तुम्हारे लिए सुन्दर कन्या ली है, गृह लक्ष्मी ली है। मैं स्वयं दहेज-प्रथा से घृणा करता हूं।
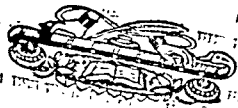
अंधविश्वास से दूर

धन्नाराम गांव का सबसे बूढ़ा किसान है। उसके खेत हैं, खेती करना उसका खास धंधा रहा है। धन्ना राम के पिता के चार खेत है। वे चारों दिशाओं में है। खेत काफी एकड़ जमीन पर फैले हुए हैं।

धन्ना के परिवार में तीन पुत्र, एक पुत्री और स्वयं की पत्नी मौजूद हैं।

धन्ना की पत्नी हमेशा पुराने ढंग से सोचती है। घर पर किसी भी अच्छे कार्य को बिना शकुन के नहीं करती। पंडित को बुलाती है। अच्छा दिन दिखलाकर फिर नया कार्य करने की अपने परिवार वालों को सलाह देती है।

धन्नाराम बहुत मेहनती रहा है। खेती योग्य जमीन तैयार करना, बीज बुवाई करना और धान-उपजाना तथा दाने निकाल कर अपने ऊंट-गाड़े से घर पर लाना आदि अनेक कार्य करने में वह तल्लीन रहता है।

उसके घर पर अनाज और चारे-पानी की कमी कभी नहीं रहती। क्योंकि धन्नाराम कभी पूरब के खेत में तो कभी पश्चिम के खेत में बरसात हो जाने पर जुटा रहता है।

धन्ना राम का जीवन अधिक परिश्रम से बना हुआ है। उसके अंग-प्रत्यंग में स्फूर्ति रहती है। वह ईमानदार, विनम्र एवं व्यवहार कुशल है। उसकी मिलन-सारिता से सभी लोग खुश रहते हैं। प्रसन्नता उसके चेहरे पर झलकती रहती है।

समय मिलने पर वह अपने अनुभवी मित्र के साथ बाजार भी जाता ाजार-भाव ध्यान में रखता है । खूब पैसे भी कमाता है यही उसकी सम्पन्नता ा राज है

धन्नाराम की बेटी बड़ी लाडली है। तीन भाइयों के बीच, यह इकलौती लड़की है। सभी परिवार वालों को वह प्यारी लगती है।

एक दिन धन्नाराम की बेटी को बुखार आ जाता है। धन्नाराम की पत्नी अनेक घरेलू इलाज करती है। परन्तु बुखार ठीक नहीं हो रहा है। धन्ना की पत्नी अपने पति से कहती है-'आप किसी पंडित को या ओझा को बुलावें। बेटी चुन्नी का पांव कहीं चक्कर(चकालिये)में आ गया है। वे मंत्र से उसे ठीक कर देंगे।'

धन्नाराम जबाव देता है- अरे भई चुन्नी की मां, इसे तो शहर में किसी सयाने वैद्य या डॉक्टर को दिखावें तो अच्छा है। इसे बुखार है। पंडित का मंत्र कोई बुखार थोड़े ही ठीक करता है?

चुन्नी की मां-"देखो! यह लड़की शनिवार को कुएं के पास पानी भरने गयी थी। बस! किसी की नजर इसे लग गयी। तब से यह बीमार पड़ गयी है।"

चुन्नी के लिए चौराहे की धूल लावें। धूल को सात बार चुन्नी के ऊपर से घुमावें। इससे बुखार कम होगा। अनमनापन मिट जावेगा।

धन्नाराम इन बातों पर तनिक भी ध्यान नहीं देता। वह बूढ़ा जरूर है, परन्तु दुनियादारी का उसे ध्यान है। वह जानता है कि जादू-टोना, मंत्र-तंत्र, नजर लगना आदि सब ठग विद्या है। एक तो आदमी दुःखी तथा दूसरी ऊपर से ठगी-वास्तव में अजीब अंधविश्वास है।

चुन्नी की मां स्वयं अपने हाथों से चौराहे की धूल लाती है। वह चुन्नी पर इसे घुमाती है। [illegible] में सुधार होता दिखाई नहीं देता है। वह [illegible] -गोचर पूछती है। शायद चुन्नी [illegible] [illegible] ऐसा वह सोचती है।

इस तरह करीब दो सप्ताह बीत गये। चुन्नी अभी अस्वस्थ है। शरीर से दुबली-पतली हो चुकी है। भोजन अच्छा नहीं लगता। चाय-दूध से भी उसे घृणा होने लगी है। बुखार एक सा ही रहता है।

एक दिन धन्नाराम के यहां उसके मित्र मिलने आते हैं। वे शहर के रहने वाले हैं। बहुत दिनों से धन्नाराम से मिलने की सोचते थे। आज वह दिन आ गया दोनों मित्र परस्पर नई-पुरानी बातों को दुहराते हैं। दोनों में बचपन की बातें चलती हैं। साथ-२ खेलना, साथ-२ पढ़ना उनके लिए उन दिनों जरूरी होता था।

बात-चीत करते-करते अचानक उस मित्र का ध्यान धन्नाराम की बेटी की ओर जाता है। थकी-मांदी और अस्वस्थ चुन्नी उनकी नजर में आती है।

वह धन्नाराम से पूछ बैठता है-अरे धन्ना! यह चुन्नी खाट में कब से सोयी हुई है? क्या इसे किसी वैद्य को दिखाया है?

धन्नाराम कहता है- अभी तक तो किसी को नहीं दिखाया है। चुन्नी की मां इसे कभी ओझा के मंत्र और जादू-टोने से ठीक करवाती है तथा कभी चौरा की धूल इसके शरीर के ऊपर से घुमाती है। सोचती हैं कि इसी से यह ठी हो जायेगी। परन्तु यह स्वस्थ नहीं हो पायी है।

शहरी मित्र धन्ना से पूछता है -अरे भाई, तुम भी इसी में विश्वास कर हो? यह तो अंधविश्वास है अनपढ़ लोगों का। बिल्कुल भोले-भाले और सीधे सादे लोगों को दूसरे लोग हमेशा ठगते आये हैं।

धन्नाराम जवाब देता है- नहीं मित्र! मैंने चुन्नी की मां को कहा है , इसे किसी डॉक्टर या वैद्य को दिखावे। परन्तु वह तो मानती ही कहां है

मित्र बोला-चलो, आज ही इसे डॉक्टर को दिखाते हैं। मैं यहां पर टर को बुला लाता हूं।

धन्नाराम- अच्छा भाई ! डॉक्टर को यहीं लाकर दिखा दें। चुन्नी शीघ्र स्वस्थ होनी चाहिये।

धन्नाराम का मित्र शहर से डॉक्टर को बुलाकर लाता है। वह चुन्नी को घर पर ही दिखाता है। डॉक्टर चुन्नी को बुखार हो बतलाता है। वह तुरन्त बैग में से इन्जेक्शन निकालता है और लगा देता है। फिर दो दिन की दवाइयां दे देता है।

डॉक्टर कहता है - धन्नाराम जी, आप बेफिक्र हो जायें। दवा देते रहें। सब ठीक हो जायेगा। दो दिन बाद मुझे रिपोर्ट भिजवा देना।

धन्नाराम-ठीक डॉक्टर साहब ! मैं स्वयं शहर आऊंगा तथा आपसे बात-चीत कर लूंगा। तबीयत के बारे में बतला दूंगा।

डॉक्टर चला जाता है। धन्नाराम का मित्र भी वापिस शहर की ओर रवाना हो जाता है। दो दिन में चुन्नी के काफी आराम है। वह स्वस्थ होती दिखाई दे रही है।

चुन्नी अपनी मां से भी बात-चीत करने लग जाती है। उसकी तबीयत में सुधार है। चुन्नी के पिता फिर दवाई शहर से ले आते हैं। चुन्नी दवाई लेती है। कुछ दिनों बाद बिल्कुल स्वस्थ हो जाती है।

अब चुन्नी की मां बहुत प्रसन्न है। वह दवाओं से स्वस्थ होने की बात को मानने लग जाती है। उसका अंधविश्वास दूर हो जाता है। धन्नाराम भी प्रसन्न है। चुन्नी की मां धन्नाराम से कहती है कि आप ठीक कह रहे हैं- दुनियां में अंधविश्वास है। मंत्र-तंत्र जादू-टोना के नाम से हजारों रुपयों की ठगी होती रहती है। मेरा अंध-विश्वास अब दूर गया है।

धन्नाराम कहता है- "चुन्नी की मां, अब अपने गांव में सब जगह से अज्ञानता हटाने के लिए लोगों को समझावो। अनपढ़ एवं अज्ञानी लोगों को दुनिया के चालाक लोग ठगते ही रहते है"-इसे दूर करना है।

चुन्नी की मां धन्नाराम की बात को मानती है। वह गांव में घर-घर जाकर लोगों के दुःख दूर करने की बातें कहती है। गांव में फैले हुए अंध-विश्वास को मिटाने का प्रयास करती है।

रूणेचा गाँव

सांय-सांय करती हवा चल रही थी। दूर-दूर तक ताल दिखाई दे रहा था। हरियाली मीलों नजर नहीं आती थी। कहीं २ मील के पत्थर की तरह एक वृक्ष सामने आता था। यात्रा की बस आगे बढ़ती जा रही थी।

बस में लगे खिड़कियों के मोटे शीशों से कभी रेत के पहाड़ तथा कभी दाहिनी ओर रेत के बगूले उड़ रहे थे। रेगिस्तान का रूप सामने दिखाई देता था।

बचपन में सुना था कि 'रूणेचा' का मेला बहुत भरता है। गुजरात, पंजाब, महाराष्ट्र एवं राजस्थान के कोने-२ से यात्री 'बाबा रामदेव' के दर्शन के लिए आते हैं।

मंदिर के दरवाजे से लेकर बाजार तक कतारबद्ध भीड़ खड़ी रहती है।

बाबा रामदेव ने रूणेचा गांव के रामसरोवर पर समाधि ली थी।

इसलिए वहां भाद्रपद और माघ में मेला लगता है। हजारों नर-नारी एकत्रित होते हैं।

संध्या के समय बस 'रूणेचा' जाकर रुकती है। दूर से यात्रियों की आवाज सुनाई पड़ती है- "खम्मा-खम्मा-खम्मा रे कंवर अजमाल रा।"

देवेन्द्र बस से बाहर निकलता है। सोचता है कि यहां विश्राम के लिए धर्मशाला होगी, परन्तु बाजार की रंगीन रोशनियों की चमचमाहट ने उसे अपनी ओर खींच लिया।

देवेन्द्र घूमकर सारा बाजार देखता है। कहीं पर फ्रेम में जड़ी 'रामसा-पीर' की तस्वीरें लटक रही है। तो कहीं गुब्बारे और किस्म-किस्म के खिलौने।

मंदिर के निकट एक बावड़ी है। कहा जाता है कि इसका पानी कभी भी समाप्त नहीं होता।

अंधे, लूले-लंगड़े एवं असहायों का एक मात्र सहारा ही "बाबा रामदेव" रहा है।

कामड़िया पंथ के शिरोमणी 'बाबा रामदेव' सब जगह अपने कार्यों के लिए प्रसिद्ध हैं।

देवेन्द्र मन्दिर के पास एक तम्बू में पहुंचता है जहाँ रात्रि-जागरण हो रहा है। भजन-संगीत मंडली अपने साज और आवाज से युक्त जमी हुई बैठी है।

देवेन्द्र वहां पहुंच जाता है। दो-तीन भजन भी सुनता है। उसे ऐसा लगता है कि बाबा रामदेव समाज सुधारक के रूप में प्रसिद्ध हुए हैं। असहाय लोगों के सहायक भी रहे हैं।

तम्बू से बाहर आया देवेन्द्र मेले में इधर-उधर घूमता है। उसे 'तन्दूरे और छम-छमों' की सुरीली धुन सुनाई पड़ती है। वह उसी ओर आगे बढ़ता है।

देवेन्द्र को पता लगता है कि यह स्त्री और पुरुष दोनों ही रात का 'जुम्मा'

पुरुष तन्दुरा बजाता है और स्त्री छम-छमों की जोड़ी लिए अनेक हाव-दिखलाती हुई गीत गाती है।

मेले में सभी जातियों के लोग दिखाई पड़ते हैं। हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख और हरिजन भी 'रामदेव बाबा' के गुणों का बखान करते हैं।

देवेन्द्र की नजर एक फटे कुर्ते वाले अध-नंगे बदन पर चली जाती है। वह

के पास जाता है। एक औरत और दो-चार नन्हें-नन्हें बालक-बालिकाएं के पास बैठे हैं।

देवेन्द्र पूछ बैठता है-आप कहां के रहने वाले है?

"बाबूजी, हम गुजरात के रहने वाले हैं।"

"इतनी दूर से आना कैसे हुआ?" देवेन्द्र ने पूछा

"बाबू जी! मंदिर के दर्शन के लिए।"

"आप कौन सी जाति के हैं?"

"हम......हम हरिजन हैं।" बाबा रामदेव हमारे समाज को अच्छा मानते थे।

"आपको किसने बुरा माना?" देवेन्द्र ने प्रश्न किया।

"लोग कहते हैं- हम अच्छे नहीं हैं, वे हमें छूते नहीं है। हम जाति से नीचे हैं।"

"यह सोचना गलत है।" देवेन्द्र ने कहा -

"आदमी-आदमी में कोई भेद-भाव नहीं होता। यही बात बाबा रामदेव ने कही है।"

हरिजन बोला- आप ठीक कहते है बाबूजी! यह भेद-भाव की दुनियां किसी स्वार्थी ने बनायी होगी। परन्तु इस बाबा के दरबार में सबको समान अधिकार हैं।

देवेन्द्र ने कहा - यह ठीक है। कहते हैं कि ईश्वर साफ-सुथरे स्थान पर रहता है। वह पवित्रता और स्वच्छता में बसता है। मनुष्य द्वारा मनुष्य के प्रति घृणा, द्वेष और छल-कपट तथा भेद-भाव रखने पर ईश्वर उस से मीलों दूर रहता है।

देवेन्द्र घूमकर सारा बाजार देखता है। कहीं पर फ्रेम में जड़ी 'रामसा-पीर' की तस्वीरें लटक रही हैं। तो कहीं गुब्बारे और किस्म-किस्म के खिलौने।

मंदिर के निकट एक बावड़ी है। कहा जाता है कि इसका पानी कभी भी समाप्त नहीं होता।

अंधे, लूले-लंगड़े एवं असहायों का एक मात्र सहारा ही "बाबा रामदेव" रहा है।

कामड़िया पंथ के शिरोमणी 'बाबा रामदेव' सब जगह अपने कार्यों के लिए प्रसिद्ध है।

देवेन्द्र मन्दिर के पास एक तम्बू में पहुंचता है जहाँ रात्रि-जागरण हो रहा है। भजन-संगीत मंडली अपने साज और आवाज से युक्त जमी हुई बैठी है।

देवेन्द्र वहां पहुंच जाता है। दो-तीन भजन भी सुनता है। उसे ऐसा लगता है कि बाबा रामदेव समाज सुधारक के रूप में प्रसिद्ध हुए हैं। असहाय लोगों के सहायक भी रहे हैं।

तम्बू से बाहर आया देवेन्द्र मेले में इधर-उधर घूमता है। उसे 'तम्बूरे और ढम-ढमों' की सुरीली धुन सुनाई पड़ती है। वह उसी ओर आगे बढ़ता है।

देवेन्द्र को पता लगता है कि यह स्त्री और पुरुष दोनों ही रात का 'जुम्मा' देते हैं।

तम्बूरा बजाता है और स्त्री ढम-ढमों की जोड़ी लिए अनेक हाव-
ी हुई गीत गाती है।

में सभी जातियों के लोग दिखाई पड़ते हैं। हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख
भी 'रामदेव बाबा' के गुणों का बखान करते हैं।

की नजर एक फटे [illegible] वाले [illegible] बदन पर जमी जाती है। वह

के पास जाता है। एक औरत और दो-चार नन्हें-नन्हें
के पास बैठें हैं।

देवेन्द्र पूछ बैठता है-आप कहां के रहने वाले है ?

"बाबूजी, हम गुजरात के रहने वाले हैं।"

"इतनी दूर से आना कैसे हुआ ?" देवेन्द्र ने पूछा

"बाबू जी ! मंदिर के दर्शन के लिए।"

"आप कौन सी जाति के हैं ?"

"हम......हम हरिजन हैं।" बाबा रामदेव हमारे समाज को अच्छा मानते थे।

"आपको किसने बुरा माना ?" देवेन्द्र ने प्रश्न किया।

"लोग कहते हैं- हम अच्छे नहीं हैं, वे हमें छूते नहीं है। हम जाति से नीचे है।"

"यह सोचना गलत है।" देवेन्द्र ने कहा -

"आदमी-आदमी में कोई भेद-भाव नहीं होता। यही बात बाबा रामदेव ने कही है।"

हरिजन बोला- आप ठीक कहते है बाबूजी ! यह भेद-भाव की दुनिया किसी स्वार्थी ने बनायी होगी। परन्तु इस बाबा के दरबार में सबको समान अधिकार हैं।

देवेन्द्र ने कहा - यह ठीक है। कहते हैं कि ईश्वर सात-सुथरे स्थान पर रहता है। वह पवित्रता और स्वच्छता में बसता है। मनुष्य द्वारा मनुष्य के प्रति घृणा, द्वेष और छल-कपट तथा भेद-भाव रखने पर ईश्वर उस से कोसों दूर रहता है।

हरिजन ने कहा- बाबूजी ! आपका कहना उचित है। हम तो ऐसे स्थान पर जाते हैं, जहाँ हमारा आदर-सत्कार हो। तिरस्कार नहीं।

इसी बीच देवेन्द्र को जय-जयकार की ध्वनि सुनाई पड़ती है। धारा होती है "रामसा पीर" की जय......हो।

देवेन्द्र उसी ओर चल देता है। वह देखता है कि मुसलमानों का समूह मन्दिर में दर्शनार्थ जा रहा है। हिन्दू, सिक्ख और अन्य प्रान्तों से आये हुए लोग भीड़ में खड़े हैं। सभी परस्पर मिलते जुलते प्रतीत होते हैं। यहाँ पर भेद-भाव दिखायी नहीं देता है।

मन्दिर से बाहर निकलते हुए एक दूसरे को मिठाइयां बांटते हैं। सभी प्रेम पूर्वक इसे ग्रहण करते हैं।

इसी तरह आधी रात बीत चुकी थी। देवेन्द्र ने घड़ी की ओर देखा, जो कि उसकी कलाई में लगी हुई थी। करीब पौने दो बजे थे।

देवेन्द्र विश्राम के लिए वहीं पर स्थित धर्मशाला की ओर चल देता है। धर्मशाला के पहरेदार ने देवेन्द्र की ओर देखा। फिर पूछ-ताछ के बाद एक कमरा खोल दिया। रात को उसे वहीं पर गहरी नींद आयी। सवेरे उठा। कुल्ली आदि करके पास की होटल से चाय मंगवायी।

होटल का नौकर दो कप चाय लाता है। देवेन्द्र धर्मशाला के पहरेदार को बुलाता है। उसे भी चाय का प्याला देता है।

वे [illegible] पीते हैं। तभी देवेन्द्र उसे पूछ बैठता है- अरे बाबा! आपको [illegible]

[illegible] है- "[illegible] के एक कम है।"

"आप यहां कब से रहते हैं?"- देवेन्द्र ने पूछा

"पच्चास वर्ष से !"

"यहां मेला कब से लगता है ?"

"मेरे जन्म के पहले से।"

देवेन्द्र ने कहा कि बाबा ! पच्चास वर्ष से यह मेला बस और रेलगाड़ियों से ही भरता आया है या अन्य साधनों से ही।

पहरेदार बोला-'बाबूजी ! यह मेला पहले सैकड़ों बैल-गाड़ियों से यात्रियों द्वारा भरता था। हजारों लोग दूर-२ से पैदल आते थे।

देवेन्द्र ने फिर पूछा- क्या यात्री गण इस मार्ग में तकलीफ नहीं पाते थे ? उन्हें चोरों-लुटेरों से भय नहीं था ?

पहरेदार ने जवाब दिया- बाबूजी ! इस मार्ग में कभी भी तकलीफ नहीं होती। यात्री लोग सभी मिल-जुल कर अपनी व्यवस्था बना लेते। उन्हें किसी प्रकार का भी डर नहीं था। डाकू-चोर-लुटेरे इस मार्ग से बहुत दूर रहते थे। यह प्रभाव तो 'बाबा रामदेव' का ही रहा है कि किसी को कोई नुकसान न हो।

देवेन्द्र ने कहा- बात सही है ! जहां हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख और हरिजन एक ही भावना से एकत्र होते है, वहां किसी को किसी से डर नहीं है। वास्तव में भेद-भाव, ऊंच-नीच और छुआ-छूत समाज के कलंक हैं। ये सब शीघ्र ही दूर होने चाहिये। सबको समान रूप से विकास करने के अवसर तभी मिल सकते हैं जब ये सब एक हों।

पहरेदार निरन्तर देवेन्द्र की बातों को सुनता रहता है। वह स्वयं भेद-भाव, ऊंच-नीच तथा अस्पृश्यता को पसंद नहीं करता है।